पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 (1) इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर
भव्य समापन समारोह
रविवार 27 मई 2012
सायं 5:00 से 7:00 बजे तक
आर्य समाज, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली
(निकट राजेन्द्र पैलेस मैट्रो स्टेशन)
हजारों की संख्या में पहुंचे

प्रभा सेठी, अध्यक्ष — आदर्श सहगल, संयोजक

वर्ष-28 अंक-24 ज्येष्ठ-2069 दयानन्दाब्द 189 16 मई से 31 मई 2012 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
E-mail : aryayouth@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

स्वतन्त्रता सेनानी, आर्य सन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी का नवम् स्मृति दिवस सम्पन्न

स्वामी दीक्षानन्द का जीवन हम सब के लिए अनुकरणीय -महापौर मीरा अग्रवाल ने दी श्रद्धांजलि

मंच का सुन्दर दृश्यः- बायें से संयोजक डॉ. अनिल आर्य, दुर्गेश आर्य, गोपाल जैन, डॉ. डी.के. गर्ग, सरोज अग्निहोत्री, डॉ. सुनील रहेजा, मनोहर लाल चावला, डॉ. उषा शर्मा, प्रो. चमन लाल सप्रु, दर्शन अग्निहोत्री, सत्यभूषण जैन, महापौर मीरा अग्रवाल, आर.एन. लखोटिया, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी सौभ्यानन्द जी व डॉ. महेन्द्र नागपाल व सुकृति भटनागर भजन प्रस्तुत करते हुए। द्वितीय चित्र में डॉ. महेन्द्र नागपाल व श्रीमती मीरा अग्रवाल को सम्मानित करते हुए दर्शन अग्निहोत्री व डॉ. अनिल आर्य।

नई दिल्ली । रविवार 13 मई 2012, आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी, स्वतन्त्रता सेनानी, वेदों के प्रकाण्ड विद्वान स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती का नवम् स्मृति दिवस हिन्दी भवन सभागार, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग में सौल्लास मनाया गया । समारोह में दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों से सैंकड़ो श्रद्धालु जन व आर्य समाजों के कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित थे । समारोह का आयोजन 'अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट' के तत्वावधान में किया गया।

समारोह की मुख्य अतिथि उत्तरी दिल्ली नगर निगम की महापौर श्रीमती मीरा अग्रवाल ने कहा कि स्वामी दीक्षानन्द जी वेदों के प्रकाण्ड विद्वान थे, उनका जीवन हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत है, हमें उनके बताये रास्ते पर चल कर वेदों का प्रचार प्रसार करना है। वेदों का ज्ञान ही विश्व को सच्ची शान्ति का मार्ग दे सकता है क्योंकि वेद का ज्ञान मानव मात्र के कल्याण के लिए है । उनका देश व समाज को समर्पित जीवन हम सबके लिए अनुकरणीय है ।

समारोह के विशिष्ट अतिथि डा. महेन्द्र नागपाल (नेता सदन, उत्तरी दिल्ली नगर निगम) ने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी जी अत्यन्त सौम्य स्वभाव वाले व्यक्ति थे, उनका आर्य समाज के हर कार्यक्रम में आशीर्वाद मिलता रहता था । आज आवश्यकता इस बात की है कि हम स्वामी जी के बताये रास्ते का अनुसरण करने का प्रण लें, देश व समाज के लिए कुछ करने की उमंग पैदा करें । समाज को सही रास्ता दिखाऐं तभी स्वामी जी को याद करना सार्थक होगा ।

मुम्बई से पधारे डा. वागीश आचार्य ने राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं में आर्य समाज को अग्रणी भूमिका निभाने का आह्वान किया, उन्होंने कहा कि राष्ट्र रहेगा तभी धर्म रहेगा । वैदिक विद्वान डा. महेश विद्यालंकार ने अपने दैनिक जीवन को पवित्र व संकल्पवान बनाने का आह्वान किया । उन्होंने कहा कि स्वामी जी वैदिक साहित्य पर अन्तिम समय तक स्वाध्याय व लेखन कार्य करते रहे।

आर्य जनों से खचाखच भरा हिन्दी भवन सभागार का सुन्दर दृश्य

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि आज फिर दलित ईसाईयों व मुस्लमानों को आरक्षण देने की चर्चा हो रही है, यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है, इससे जहां हिन्दू धर्मान्तरण को बढ़ावा मिलेगा इसके साथ ही यह राष्ट्रघाती कदम होगा, किसी भी प्रकार का आरक्षण समाज को दो हिस्सों में बांट कर कमजोर करने का काम करता है, उन्होंने आरक्षण का कड़ा विरोध किया । अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट के प्रधान दर्शन अग्निहोत्री ने कहा कि स्वामी जी ने यज्ञिय भावना का प्रचार प्रसार किया हमें भी अपना दैनिक जीवन यज्ञमय बनाना चाहिए।

टैक्स डाक्टर आर.एन.लखोटिया ने ओ३म ध्वज का आरोहण किया। कु. सुकृति भटनागर व पं. दिनेश पथिक (अमृतसर) ने अपने मधुर भजनों से समां बांध दिया।

इस अवसर पर श्री योगेश मुन्जाल, आर्य संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, स्वामी सौभ्यानन्द जी, शिक्षाविद डा.डी.के.गर्ग, सत्यभूषण जैन, सुरेन्द्र कोहली, चौ. ब्रह्म प्रकाश मान ने भी अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत किए। प्रमुख रूप से आर्य नेत्री श्रीमती सरोज अग्निहोत्री, डा.सुनील रहेजा, अंजलि मेहता, पं.सत्यपाल पथिक, महेन्द्र भाई, प्रवीन आर्य, शशि भूषण मल्होत्रा, राकेश भटनागर, सत्यानन्द आर्य, मनोज चतुर्वेदी (एटा), देवेन्द्र भगत, दुर्गेश आर्य, सुरेश आर्य, यशोवीर आर्य, सुदेश भगत, वेदप्रकाश आर्य, रामकुमार सिंह, सन्तोष शास्त्री, वेद प्रकाश मिगलानी, रमेश बुद्विराजा, शिशुपाल आर्य, सुरेन्द्र रैली, चतर सिंह नागर, रविन्द्र मेहता, सुरेन्द्र गुप्ता, जोगिन्द्र मान, ओम सपरा, मनोहर लाल चावला आदि उपस्थित थे। आर्य समाज सेवी आचार्य वागीश शर्मा (गुरूकुल एटा), स्वामी रमोला प्रसाद, डा.उषा शर्मा, पं.मामचन्द पथिक (हरिद्वार), आचार्या प्रतिभा आर्या को शाल, स्मृति चिन्ह व ग्यारहां हजार रूपये की मान राशी भेंट कर अभिनन्दन किया गया । समारोह के पश्चात सभी ने ऋषि लंगर का आनन्द लिया।

ऐसे थे दयानन्द

–कृष्णचन्द्र गर्ग

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन में अन्दर बाहर सत्य और सात्विकता ओतप्रोत थी। वे हर प्रकार के आडम्बर से परे थे। लोकोपकार उनका एकमात्र लक्ष्य था। परमात्मा ने उन्हें बुद्धिबल और नैतिक बल गजब का दिया था। उन्होंने समाज की स्थिति का तथा पुस्तकों का स्वाध्याय खूब किया था। उनकी स्मरण शक्ति कमाल की थी। व्याख्यान वे सरल और स्पष्ट भाषा में दिया करते थे। उनकी शैली मधुर और तर्कपूर्ण होती थी। उन्होंने सोई हुई हिन्दू जाति को जगाया। उसके खोए हुए गौरव को वापिस दिलाया। उसकी कायरता, अज्ञानता, भीरुता और अन्धविश्वास को धोया। महर्षि दयानन्द ने डंके की चोट से ऐलान किया कि आर्य लोग जो आजकल हिन्दू कहलाते हैं भारतवर्ष के ही मूल निवासी हैं। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि आर्य भारत में कहीं बाहर से आए थे। आर्यों का संस्कृत भाषा में साहित्य ही संसार में सबसे पुराना साहित्य है। संस्कृत के किसी ग्रन्थ में नहीं लिखा कि आर्य भारतवर्ष में कहीं बाहर से आकर बसे थे। इस देश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त्त था अर्थात आर्यों का देश। उससे पहले इसका कोई और नाम न था। इस प्रकार उन्होंने हिन्दुओं के मनोबलों को बढ़ाया। स्वामी जी हिन्दुओं की सभी कमियों और कमजोरियों के लिए पुराणों को जिम्मेदार मानते थे। वे पुराणों को महर्षि वेद व्यास जी की रचना न मानते थे। वे लिखते हैं ''जो अठारह पुराणों के कर्ता व्यास जी होते तो उनमें इतने गपौड़े न होते क्योंकि शारीरिक सूत्र, योगदर्शन के भाष्य आदि व्यास जी कृत ग्रन्थों को देखने से पता लगता है कि वे बड़े विद्वान, सत्यवादी, धार्मिक, योगी थे। वे ऐसी झूठी बातें कभी न लिखते जैसी पुराणों में हैं।'' स्वामी जी मूर्तिपूजा को भारत के सारे अनिष्टों का मूल मानते थे। पुराणों ने ही मूर्तिपूजा को प्रोत्साहित किया और हिन्दुत्व की कब्र खोद दी। अवतारवाद, जन्म पर आधारित जाति–प्रथा, सती प्रथा, विधवा विवाह का का निषेध आदि, अनेक ऐसी कुरीतियां जिनके कारण हिन्दू बदनाम हैं, सबको पुराणों में मान्यता प्राप्त है। पुराणों की ऐसी मान्यताएं वेद विरुद्ध हैं। यदि पुराण और पौराणिक विचार हिन्दुओं में न होते तो ईसाईयों और मुसलमानों को हिन्दुओं के विरोध में कहने को कुछ भी न मिल पाता और न ही इतनी आसानी से हिन्दू मुसलमान और ईसाई बनते। हिन्दू मत कच्चे धागे की तरह बन गया था जिसे हलके झटके से तोड़ा जा सकता था। महर्षि दयानन्द ने पुराणों का पुरजोर खण्डन किया और वैदिक धर्म की श्रेष्ठता को प्रकट किया। इसलाम और ईसाईयत की कमियां और खराबियां दिखाकर हिन्दुओं में आत्मविश्वास पैदा किया जिससे उन्हें अपने वैदिक धर्म में बने रहने की प्रेरणा मिली और हिन्दू मत लोहे की छड़ सा मजबूत हो गया। महर्षि दयानन्द सत्य के प्रबल पक्षधर थे। आर्य समाज के दस नियमों में चौथा नियम उन्होंने दिया – सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। वे मानते थे कि मनुष्य का आत्मा सत्य–असत्य को जानने वाला है। परन्तु पण्डित लोग अपनी प्रतिष्ठा, हानि और निन्दा के भय से सत्य को प्रकट नहीं करते। उन्होंने **'स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश'** में उपनिषद का निम्न श्लोक उद्धृत किया है –

न हि सत्यात्परो धर्मो नानृतात्पातकं परम्। न हि सत्यात्परं ज्ञानं तस्मात्सत्यं समाचरेत्।।

अर्थात सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है, झूठ से बढ़कर कोई पाप नहीं है और सत्य से बढ़कर कोई ज्ञान नहीं है। इसलिए सत्य का आचरण करें। महर्षि दयानन्द दिखावे के बाहरी चिन्हों को धर्म से न जोड़ते थे। वे जब किसी को रुद्राक्ष पहने देखते थे तो उससे कहा करते थे कि इन गुठलियों के पहनने से क्या लाभ है। इससे मुक्ति नहीं होती। मुक्ति तो ज्ञान से होती है। मनुस्मृति में भी कहा गया है – 'न लिंगम् धर्म कारणं' अर्थात बाहरी चिन्हों से व्यक्ति धार्मिक नहीं बनता। धार्मिक तो शुभ आचरण से बनता है। महर्षि मनु ने कहा है – आचारः परमो धर्मः।

महर्षि दयानन्द मानते थे कि हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं। आर्य का अर्थ है श्रेष्ठ पुरुष। अरब के लोग काफिर और दुष्ट को हिन्दू कहते हैं। विदेशी मुसलमानों ने हमें हिन्दू नाम दिया है।

स्वामी जी श्री कृष्ण जी को एक महापुरुष मानते थे। सत्यार्थप्रकाश में वे लिखते हैं ''देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत में अति उत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव और चरित्र धर्मात्माओं के समान है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मृत्यु तक बुरा काम कुछ भी किया हो ऐसा नहीं लिखा। और इस भागवत वाले ने अनुचित मनमाने दोष लगाए हैं। दूध, दही, मक्खन आदि की चोरी, कुब्जा दासी से सम्भोग, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीड़ा आदि झूठे दोष श्री कृष्ण जी में लगाए हैं। इसको पढ़–पढ़ा, सुन–सुना के अन्य मत वाले श्री कृष्ण जी की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्री कृष्ण जी जैसे महात्माओं की झूठी निन्दा क्योंकर होती।''

महाभारत के उद्योगपर्व (विदुरनीति) में एक श्लोक है –

पुरुषा बहवो राजन् सततं प्रियवादिनः। अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।

महात्मा विदुर धृतराष्ट्र से कहते हैं – हे राजन! इस संसार में दूसरे को निरन्तर प्रसन्न करने के लिए प्रिय बोलने वाले प्रशंसक लोग बहुत हैं। परन्तु सुनने में अप्रिय लगे और वह कल्याण करने वाला वचन हो उसका कहने और सुनने वाला पुरुष दुर्लभ है। महर्षि दयानन्द ऐसे ही हितकारक वचन कहने वाले बिरले मनुष्य थे। वे राजे–महाराजाओं के सामने, बड़े से बड़े अंग्रेज अफसरों की उपस्थिति में, मुल्ला मौलवियों और पण्डों की मौजूदगी में निर्भीक होकर सबके हित की सत्य बात कहा करते थे। महर्षि दयानन्द ने राष्ट्रीय स्वाभिमान को जगाया, विशुद्ध भारतीयता पर बल दिया। सत्य–असत्य विवेक की प्रवृत्ति को जगाया, बुद्धिवाद को बढ़ावा दिया, अन्धविश्वास और रूढ़िवाद का खण्डन किया। स्वामी जी मूर्तिपूजा को सब बुराईयों की जड़ मानते थे और मन्दिरों को उनके अड्डे मानते थे। जुलाई 1869 की बात है। कानपुर में पं. गुरुप्रसाद और प्रयागनारायण ने 'कैलास' और 'बैकुण्ठ' नामक दो मन्दिर बहुत रुपया लगाकर बनवाए थे। स्वामी जी ने उनसे कहा था कि आप लोगों ने लाखों रुपया व्यर्थ खो दिया। इससे तो यह अच्छा था कि कन्याकुब्ज़ कन्याओं का जो 30–30 वर्ष की कुमारी बैठी हैं, विवाह करवा देते या कोई कला–कौशल का कारखाना खोलते जिससे देश और जाति का भला होता।

स्वामी जी का दरबार मित्र, शत्रु सबके लिए खुला था। वे सबके साथ प्रेम से बर्ताव करते थे। परन्तु यदि कोई उनके साथ दुष्टता का व्यवहार करने लगता तो वे रुद्ररूप धारण करके उसे दण्ड देने को तैयार हो जाते थे।

सन 1872 में भागलपुर में प्रसंग आने पर स्वामी जी ने कहा कि हिन्दुओं में जो मुसलमानों के प्रति सहानुभूति का अभाव और द्वेष का भाव है उसका कारण यह नहीं कि हिन्दुओं को मुसलमानों से स्वाभाविक द्वेष है, वास्तव में उसका कारण हिन्दुओं के प्रति मुसलमानों का व्यवहार है। महर्षि दयानन्द के जीवन का सर्वोपरि लक्ष्य परोपकार था। सन 1868 के आरम्भ की बात है। कर्णवास में एक दिन पण्डित इन्द्रमणि ने स्वामी जी से कहा कि आप अवधूत होकर खण्डन–मण्डन के बखेड़े में क्यों पड़े हैं। तो उन्होंने उत्तर दिया कि ''मेरे लिए बखेड़ा नहीं है, प्रत्युत यह ऋषि का ऋण चुकाना है। स्वार्थी लोगों ने ऋषि–सन्तान को कुरीतियों में फंसा रखा है। मुझसे उसकी यह दीन दशा देखी नहीं जाती। मैंने उसे सन्मार्ग पर लाने का प्रण कर लिया है।'' इसीलिए महर्षि ने आर्य समाज का छठा नियम बनाया – संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। इसी प्रकार आर्य समाज का नौवां नियम बनाया – प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए। किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। सन 1873 में कलकत्ता में स्वामी जी अपने व्याख्यानों में कहा करते थे कि जब तक वेद न पढ़ाए जायें संस्कृत की शिक्षा से कोई लाभ नहीं। पुराणों की बुरी शिक्षा से लोभ व्यभिचारी हो जाते हैं और जो विचारशील हैं वे धर्म से पतित होकर हानिकारक बन जाते हैं। स्वामी जी कहते थे कि पत्थरों को पूजने से पण्डितों की बुद्धि पत्थर हो गई है। इस कारण से वे सत्य–सिद्धान्तों को समझने में असमर्थ हैं। मैं उनकी जड़पूजा छुड़वाकर उनकी बुद्धि को निर्मल करने का प्रयत्न कर रहा हूँ। वे यह भी कहते थे ''मेरा काम लोगों के मनमन्दिरों से मूर्तियां निकलवाना है, ईंट–पत्थर के मन्दिरों को तोड़ना–फोड़ना नहीं है। सन 1874 में मुम्बई में अनेक अंग्रेज कर्मचारी स्वामी जी से मिलने और उनके व्याख्यान सुनने आया करते थे और उनकी प्रशंसा करते थे। स्वामी जी अंग्रेजी राज्य की बहुत प्रशंसा किया करते थे। इसी कारण से बहुत से लोग उन्हें अंग्रेजों का गुप्तचर कह दिया करते थे। 1874 में नासिक में स्वामी जी ने यह भी कहा कि भारत में सही अर्थों में अंग्रेज ही ब्राह्मण हैं।

सन 1878 में अजमेर में राय बहादुर श्यामसुन्दरलाल ने स्वामी जी से कहा कि आप मूर्तिपूजा पर इतना तीव्र आक्रमण क्यों करते हैं, उसे थोड़ा नम्र कर देने से भी तो काम चल सकता है। स्वामी जी ने उत्तर दिया – मूर्तिपूजा पर मृदु आक्रमण करने व उससे किसी प्रकार की सन्धि करने से हमारे सिद्धान्तों की भी वही दशा होगी जो अन्य सिद्धान्तों की हुई है और कुछ समय के बाद आर्य समाज पौराणिक होकर हिन्दुओं में मिल जाएगा।

भोजन कैसे भ्रष्ट होता है – फर्रुखाबाद में एक दिन एक साध स्वामी जी के लिए कढ़ी और चावल बनाकर लाया और उन्होंने उसे खा लिया। इस पर ब्राह्मणों ने कहा कि आप भ्रष्ट हो गये जो साधों के घर का भोजन खा लिया। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि भोजन दो प्रकार से भ्रष्ट होता है – एक तो यदि किसी को दुख देकर धन प्राप्त किया जाए और उससे अन्न आदि खरीद कर भोजन बनाया जाए, दूसरे भोजन मलिन हो या उसमें कोई मलिन वस्तु गिर जाए। साध लोगों का मेहनत का पैसा है, उससे प्राप्त किया हुआ भोजन उत्तम है। देश की भाषा हिन्दी – महर्षि दयानन्द देश की एकता के लिए आवश्यक समझते थे कि सारे देश की भाषा एक हिन्दी हो। इसलिए वे अपने ग्रन्थों का किसी दूसरी भारतीय भाषा में अनुवाद न करवाना चाहते थे। वे चाहते थे कि सभी देशवासी उनके ग्रन्थों को हिन्दी में ही पढ़ें। वे मानते थे कि भारतवासियों को हिन्दी भाषा सीख लेना कुछ कठिन नहीं है। जो इस देश में जन्म लेकर अपनी भाषा सीखने का परिश्रम नहीं करता उससे और क्या आशा की जा सकती है। उनके ग्रन्थों का अंग्रेजी आदि विदेशी भाषाओं में अनुवाद के वे विरोधी न थे। सन 1870 में मिर्जापुर में स्वामी जी ने एक बंगाली बनवारीलाल को अंग्रेजी सीखने के लिए और मैक्समूलर कृत वेदों का अंग्रेजी अनुवाद सुनने के लिए नौकर रखा था।

सन 1879 में दानापुर में एक दिन एक सज्जन ने स्वामी जी से कहा कि आप इस्लाम के विरुद्ध न कहा करें। उस समय तो स्वामी जी ने कोई उत्तर न दिया। परन्तु सांयकाल को जो व्याख्यान दिया वह आदि से अन्त तक इस्लाम के सिद्धान्तों पर ही था जिसमें उनकी तीव्र समालोचना की। व्याख्यान का आरम्भ ही इन शब्दों से किया कि मुझे कहा गया है कि मुसलमानी मत का खण्डन मत करो, परन्तु मैं सत्य को छिपा नहीं सकता। जब मुसलमानों की चलती थी तब वे हम लोगों का तलवार से खण्डन करते थे। अब यह अन्धेर देखो कि मुझे उनका जिह्वा मात्र से खण्डन करने से मना करते हैं। मैं ऐसा अच्छा राज्य पाकर भला किसी की पोल खोलने से कभी रुक सकता हूँ। सन 1881 में रायपुर में ठाकुर हरिसिंह स्वामी जी से मिलने आए। स्वामी जी ने ठाकुर साहब से पूछा कि आपके यहां राजमन्त्री कौन है तो उन्होंने उत्तर दिया कि शेख इलाही बख्श हैं, परन्तु वे जोधपुर गए हैं। उनके पीछे उनके भतीजे करीम बख्श (जो वहां उपस्थित थे) सब काम देखते हैं। यह सुनकर स्वामी जी ने कहा कि आर्य पुरुषों को उचित है कि मुसलमानों को अपना राजमन्त्री न बनाएं, ये दासीपुत्र हैं। यह सुनकर करीम बख्श और अन्य 5–7 मुसलमान, जो वहां बैठे थे, क्रोध में भर गए।

एक दिन पण्ड्या मोहनलाल ने स्वामी जी से प्रश्न किया कि भारत का पूर्ण हित और जातीय उन्नति कब होगी। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि एक धर्म, एक भाषा और एक लक्ष्य बनाए बिना ऐसा होना मुश्किल है। वेदों के सम्बन्ध में महर्षि लिखते हैं ''मैं वेदों में कोई बात युक्ति विरुद्ध वा दोष की नहीं देखता और उन्हीं पर मेरा मत है।'' महर्षि का यह मत सभी ऋषि–मुनियों के मत के अनुकूल ही है। वैशेषिक दर्शन में महर्षि कणाद लिखते हैं – बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे। अर्थात वेद का प्रत्येक वाक्य समझदारी से बना है। महर्षि मनु कहते हैं – यस्तर्केणानुसन्धते तं धर्मं वेद नेतरः। अर्थात जो युक्ति से सिद्ध हो वही वेद का धर्म है, और कोई नहीं। महर्षि दयानन्द वेदों को ईश्वर कृत तथा सब सत्य विद्याओं का पुस्तक मानते थे। वे वेद पढ़ने का अधिकार स्त्री–पुरुष, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र सबका मानते थे और वे मानते थे कि वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। महर्षि दयानन्द का स्वाध्याय बहुत विस्तृत था। ''भ्रान्ति निवारण'' पुस्तक में पण्डित महेशचन्द्र न्यायरत्न को उत्तर देते हुए वे लिखते हैं – ''मैं अपने निश्चय और परीक्षा के अनुसार ऋग्वेद से लेके पूर्व मीमांसा पर्यन्त अनुमान से तीन हजार ग्रन्थों के लगभग मानता हूँ।'' अंग्रेजी राज्य के सम्बन्ध में – 23 नवम्बर 1880 को थियोसौफिकल सोसायटी की मैडम ब्लेवास्तिकी को लिखे पत्र में स्वामी दयानन्द भगवान को धन्यवाद देते हैं कि अंग्रेजी राज्य में मुसलमानों के अत्याचार से कुछ–कुछ छुटकारा मिला है। ''मैं तथा अन्य सज्जन लोग पुस्तकें लिखने, उपदेश देने तथा धर्म के विषय में स्वतन्त्र हैं। इसका कारण इंग्लैण्ड की महारानी, पारलियामैंट तथा भारत में राज्याधिकारी धार्मिक, विद्वान और सुशील हैं। अगर ऐसा न होता तो स्वतन्त्रता से व्याख्यान देना, वेदमत प्रचारक पुस्तकें लिखना सम्भव न होता और आज तक मेरा शरीर भी बचना कठिन था। इसलिए इन सभी महानुभावों को हम धन्यवाद देते हैं।'' पण्डित महेन्द्रपाल आर्य (पूर्व

नाम मौलवी महबूब अली) जिला बागपत बड़ौत के पास बरवाला में एक बड़ी मस्ज़िद के इमाम थे। महर्षि दयानन्द कृत सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर वे आर्य समाज में आ गये। वे कहते हैं ''मैं अज्ञानियों के टोले से निकल कर ज्ञानियों के टोले में आया हूँ। मुसलिम समाज अनपढ़ व अन्धविश्वासियों का समाज है। आर्य समाज पढ़े लिखे बुद्धिजीवियों का समाज है। बाकी जिन्दगी मैं पढ़े लिखे अन्धविश्वासमुक्त नेक लोगों के साथ बिताना चाहता हूँ।'' सत्यार्थप्रकाश के सम्बन्ध में प्रसिद्ध देशभक्त लाला हरदयाल एम.ए. के विचार – ''इस महान ग्रन्थ के अध्ययन से मेरी विचारधारा बदल गई है। सोई हुई जाति के स्वाभिमान को जागृत करने वाला यह ग्रन्थ अद्वितीय है।''

वीर सावरकर की सत्यार्थप्रकाश पर टिप्पणी – ''हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में गर्म खून का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे। सत्यार्थप्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।'' महर्षि दयानन्द सत्यार्थप्रकाश के अन्त में स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में मनुष्य की परिभाषा में लिखते हैं – ''मनुष्य उसी को कहना कि विचारशील होकर अपनी तरह दूसरों के सुख-दुख और हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपनी पूरी ताकत से अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सब प्रकार से किया करे। इस काम में चाहे उसको कितना ही बड़ा दुख झेलना पड़े, चाहे प्राण भी भले ही जावें परन्तु इस मनुष्यरूप धर्म से पृथक कभी न होवे।'' महाराजा भर्तृहरि जी का एक श्लोक है –

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मी समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्,
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः।

अर्थात नीति को जानने वाले लोग चाहे निन्दा करें या प्रशंसा करें, धन आए या जाए, मृत्यु अभी आ जाए या चिरकाल के बाद आए, परन्तु धैर्यवान लोगों के पग न्याय के मार्ग से विचलित नहीं होते। यह श्लोक महर्षि दयानन्द के जीवन पर पूरी तरह घटित होता है। सभी प्रकार के विघ्न-बाधाओं, खतरों और प्रलोभनों से टक्कर लेते हुए स्वामी जी सत्य और न्याय के प्रचार पर डटे रहे। प्रसिद्ध कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला ने कहा था – हमारा सबसे अधिक उपकार महर्षि दयानन्द ने किया है। महान कहानीकार उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द की एक कहानी है 'आपका चित्र'। कहानी के नायक ने अपने कमरे में स्वामी दयानन्द का एक चित्र लटका रखा है। वह बता रहा हैं कि यह चित्र उसने क्यों लटका रखा है। ''मैं उसे केवल इस कारण से अपने कमरे में लटकाए हुए हूँ कि स्वामी जी के जीवन का उच्च और पवित्र आचरण सदा मेरी आँखों के सामने रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाए, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाएं अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट बेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्त के दर्शनों से आकुल व्याकुल हृदय को शान्ति हो, दृढ़ता धीरज बने रहें, क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूँ कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुँचा है और एक बार नहीं, कई बार।

– 831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा, 0172-2572197

जहां नहीं होता कभी विश्राम ।। ओ३म् ।। आर्य युवक परिषद् है उसका नाम

युवा शक्ति को चरित्रवान, देशभक्त, ईश्वर भक्त, संस्कारवान बनाने का अभियान

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत)

के तत्वावधान में

विशाल आर्य युवक चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर

बलमुपास्व

दिनांक : शनिवार, 9 जून से रविवार, 17 जून 2012 तक

स्थान : ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर - 7, पुष्प विहार (साकेत), नई दिल्ली (निकट मेट्रो स्टेशन मालवीय नगर)

(1) कक्षा 6 से 12 वीं तक के युवक भाग ले सकेंगे (2) इच्छुक युवक 150 रू शिविर प्रवेश शुल्क सहित अपना स्थान आरक्षित करवा लें। सम्पर्क : श्री रामकुमार सिंह - 9868064422, श्री संतोष शास्त्री - 9868754140

2. दिल्ली आर्य कन्या शिविर
दिनांक 20 मई से 27 मई 2012 तक
स्थान : आर्य समाज, पुराना राजेन्द्र नगर,नई दिल्ली-60
सम्पर्क: श्रीमती प्रभा सेठी : फोन - 9871601122,
श्रीमती अर्चना पुष्करना, फोन - 9899555280
श्रीमती आदर्श सहगल - 9266101941

3. एटा आर्य युवक शिविर
दिनांक 21 मई से 27 मई 2012 तक
स्थान : प्राइमरी स्कूल, ग्राम लंगुटिया, दातौली,एटा, उ0प्र
सम्पर्क : श्री यज्ञवीर चौहान - 09810493055
श्री प्रवीन आर्य - 9911404423

4. राजस्थान युवक निर्माण शिविर
दिनांक 27 मई से 3 जून 2012 तक
स्थान : डी0 वी0 एम0 पब्लिक स्कूल नारनौल रोड बहरोड, जिला अलवर, राजस्थान
सम्पर्क : श्री रामकृष्ण शास्त्री,
फोन : 09461405709

5. झारखण्ड आर्य कन्या शिविर
दिनांक 3 जून से 10 जून 2012 तक
स्थान : आर्ष कन्या गुरूकुल, आर्य समाज, नवावगंज हजारीबाग, झारखण्ड
सम्पर्क :- श्री कृष्ण प्रसाद कौटिल्य
फोन : 09430309525, 09835140710

6. सोनीपत आर्य कन्या शिविर
सान्निध्य : श्री वीरसेन सैनी जी
दिनांक 11 जून से 17 जून 2012 तक
स्थान : दिल्ली विद्यापीठ, देवड़ रोड, सोनीपत (हरियाणा)
सम्पर्क : श्री मनोहरलाल चावला, फोन : 09813514699
श्री हरिचन्द स्नेही - 09416693290

7. पलवल युवक निर्माण शिविर
दिनांक 11 जून से 17 जून 2012 तक
स्थान : आर्य समाज, जवाहर नगर (कैम्प),पलवल
सम्पर्क : स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, फोन : 9416267482
प्रो0 जयप्रकाश आर्य - 09813491919

8. फरीदाबाद युवक निर्माण शिविर
दिनांक 17 जून से 24 जून 2012 तक
स्थान : ग्रीन फील्ड प. स्कूल, ग्राम सुनपेड़, बल्लभगढ़ फरीदाबाद (हरियाणा)
सम्पर्क : श्री जितेन्द्र सिंह आर्य, फोन : 9210038065
श्री विजयभूषण आर्य : 9810991993

9. करनाल युवक चरित्र निर्माण शिविर
दिनांक 20 जून से 24 जून 2012 तक
स्थान : आर्य समाज, प्रेम नगर, करनाल, हरियाणा
सम्पर्क : श्री स्वतंत्र कुकरेजा - 09813041360
श्री हरेन्द्र चौधरी - 09541555000

आर्य युवा शक्ति का उत्साह वर्धन करने के लिए सभी शिविरों के उद्घाटन एवं 'समापन समारोह ' के अवसर पर सपरिवार दल बल सहित पहुंचकर आशीर्वाद प्रदान करें
राष्ट्र निर्माण के कार्य में आपका तन-मन-धन से सहयोग अपेक्षित है

निवेदक

डा0 अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष, 9810117464
यशोवीर आर्य, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, 9312223472
महेन्द्र भाई, राष्ट्रीय महामंत्री, 9013137070
धर्मपालआर्य, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, 9871581398

केन्द्रीय कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली –110007
Email : aryayouth@gmail.com • Website : www.aryayuvakparishad.com
join - http://www.facebook.com/group/aryayouth • aryayouthgroup@yahoogroups.com

स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस पर डॉ. वागीश व महापौर मीरा अग्रवाल का अभिनन्दन

रविवार 13 मई 2012, स्वामी दीक्षानन्द स्मृति दिवस पर डॉ. वागीश शर्मा को सम्मानित करते बायें से श्री संतोष शास्त्री, दुर्गेश आर्य, दर्शन अग्निहोत्री, डॉ. अनिल आर्य। द्वितीय चित्र में महापौर मीरा अग्रवाल का अभिनन्दन करते बायें से आदर्श सहगल, सुदेश अरोड़ा, डॉ. उषा शर्मा, सुकृति भटनागर, किरण रहेजा, रचना आहूजा व सुमन नागपाल

दानी महानुभावों से अपील:– समस्त आर्य समाजों व दानी महानुभावों से अपील है कि शिविर के रचनात्मक कार्यो हेतु चलने वाले विशाल ऋषि लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, रिफाइण्ड, घी, मसाले, रूह अफजा, सब्जी, दूध पाउडर आदि से सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें। कृप्या समस्त धन राशि '' केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, दिल्ली'' के नाम से क्रॉस चैक/ड्राफ्ट द्वारा कार्यालय के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

आर्य समाज हापुड़ में ''युवा चेतना सम्मेलन'' सम्पन्न

भगवा रंग हमारी पावन संस्कृति व गौरव की पहचान है

-आर्य नेता डा.अनिल आर्य

समारोह के मुख्य अतिथि डा. अनिल आर्य विजेता बच्चों को पुरस्कृत करते हुए, साथ में प्रांतीय महामंत्री प्रवीन आर्य, विकास अग्रवाल। द्वितीय चित्र में मंच पर अभिनंदित बायें से अनुपम आर्य, विकास अग्रवाल, प्रवीण आर्य, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, डॉ. अनिल आर्य, कै. अशोक गुलाटी, इन्दुभूषण मित्तल व आनन्द प्रकाश आर्य

हापुड़। रविवार 6 मई 2012, आर्य समाज, हापुड़ के चार दिवसीय वार्षिक आर्य महासम्मेलन का भव्य समापन हो गया। सम्मेलन में हजारों श्रद्वालुओं ने भाग लेकर विभिन्न विद्वानों से प्रेरणा व शिक्षा ग्रहण की। युवा चेतना सम्मेलन में मुख्य अतिथि केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि आजकल भगवा संस्कृति पर चर्चा जोरों पर है, भगवा आंतकवाद का नया शब्द खोज कर हिन्दू संस्कृति को बदनाम करने का कुचक्र चल रहा है, उन्होंने कहा कि भगवा भारतीय संस्कृति की आत्मा है ओर हमारी पुरातन पावन संस्कृति की आन-बान और शान है, ओ३म् का केसरिया ध्वज भी सार्वभौम ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' की विश्वबन्धुत्व की संस्कृति का प्रतीक है इसे किसी दल सम्प्रदाय के साथ जोड़ना उचित नहीं है । यह तो सर्वस्व होम करने वाले ओर समाज के लिए जीने वाले संन्यास का प्रतीक है यह त्याग ओर बलिदान की संस्कृति का परिचायक है । इसे किसी शुद्र राजनीति से जोड़ना उचित नहीं है। डा.आर्य ने कहा कि आज इलेक्ट्रोनिक्स मीडिया द्वारा पाखण्ड व अंधविश्वास परोस कर युवा पीढ़ी को भ्रमित करने का कार्य चल रहा है इससे सावधान रहने की आवश्यकता है । उन्होंने विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा मुस्लिम राष्ट्रपति बनाने के लिए चल रही होड़ को देश के लिए दुर्भाग्य पूर्ण बताया।

परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री महेन्द्र भाई ने कहा कि महर्षि दयानन्द का चिन्तन ही समाज को सही दिशा दे सकता है । सम्मेलन में उ. प्र. प्रान्तीय अध्यक्ष आनन्द प्रकाश आर्य, महामन्त्री प्रवीन आर्य, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, विकास अग्रवाल, कै.अशोक गुलाटी, पं.प्रेमपाल शास्त्री, चिराग त्यागी आदि ने भी सम्बोधित किया । समारोह का संचालन अनुपम आर्य ने किया । प्रतिभाशाली छात्रों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मान किया गया व गुरूकुल के बच्चों ने रोचक व्यायाम प्रदर्शन के कार्यक्रम दिखाये ।

आर्य समाज कबीर बस्ती, वसंत विहार व आर.के. पुरम सैक्टर-3 का दृश्य

शनिवार 5 मई 2012 को आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली में आयोजित परिषद् की बैठक में बाएं से श्री यशोवीर आर्य, राम कुमार सिंह, महेन्द्र भाई, डा. अनिल आर्य, मनोहर लाल चावला, हरिचन्द स्नेही। द्वितीय चित्र में रविवार 6 मई को क्रमशः आर्य समाज वसन्त विहार व आर्य समाज आर. के. पुरम सैक्टर-3, नई दिल्ली में सम्बोधित करते डा. अनिल आर्य साथ में स्वामी शिवानन्द सरस्वती।

गाजियाबाद आर्य सम्मेलन सम्पन्न व '' देश विभाजन और श्यामा प्रसाद मुखर्जी'' का विमोचन

रविवार 29 अप्रैल 2012 को मुरादनगर में आयोजित आर्य महा सम्मेलन में हापुड़ के विधायक श्री गजराज सिंह का स्वागत करते श्री माया प्रकाश त्यागी, श्री आनन्द प्रकाश आर्य व श्रद्धानन्द शर्मा, श्री सत्यवीर शर्मा व विरेन्द्र शास्त्री। द्वितीय चित्र में 11 मई 2012 को नई दिल्ली के कॉन्स्टीटयूशन क्लब में ''देश विभाजन और श्यामा प्रसाद मुखर्जी'' पुस्तक का विमोचन करते श्री राजनाथ सिंह, श्री केदारनाथ साहनी, श्री अरूण कुमार व डॉ. दिनेश चन्द्र सिन्हा।

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धाजंलि

(1) श्री रामकृष्ण शास्त्री (बहरोड़) की धर्मपत्नी का गत दिनों निधन हो गया। (2) श्री राजेश भाटिया (गीता कॉलोनी) का गत दिनों निधन हो गया। (3) श्री करण सिंह वर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा का निधन हो गया। (4) श्री रंजीत सिंह राणा की पुत्रवधु श्रीमती उषा देवी का निधन हो गया। (5) श्री अनिल भाटिया (झिलमिल कॉलोनी) की पूज्य माता श्रीमती कृष्णा भाटिया का निधन हो गया। (6) श्री मामेन्द्र कुमार (ऐस्कॉर्टस) की धर्मपत्नी श्रीमती सत्यवती का निधन हो गया।

आर्य समाज गुड़ मण्डी दिल्ली में कोचिंग

आर्थिक रूप से कमजोर 10वीं कक्षा के विद्यार्थियों हेतु केवल 100/- रूपये मासिक में व्यवस्था। सम्पर्क:- वीरेन्द्र आहुजा-9910785716

गुरूकुल पौंधा देहरादून चलो

गुरूकुल का उत्सव दिनांक 1, 2, 3 जून 2012 को आयोजित किया जा रहा है। सह परिवार दर्शन दें। **- स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती-०९८६८८५५१५५**

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयंक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9910649696, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970